लाला रामदेव साबित हुए मिलावटी बाबा

पतंजलि शहद के नाम पर बेचती है शक्कर

विजय शंकर सिंह

व्यापारियों के उत्पादों के सैम्पल परीक्षण होते रहते हैं और अक्सर महत्वपूर्ण ब्रांड में भी जब उनकी लैब टेस्टिंग होती है तो, गलतियां मिलती रहती हैं। पर सबसे आश्चर्यजनक है बाबा रामदेव की पतंजलि कम्पनी के उत्पाद में मिलावट का पाया जाना। रामदेव के उत्पाद पहले भी लैब टेस्ट में फेल हो चुके हैं, और अब भी वे फेल हो रहे हैं।

रामदेव एक व्यापारी के बजाय एक योगगुरु या आयुर्वेद के विश्वसनीय उत्पाद बनाने वाले के रूप में जाने जाते हैं। वे अक्सर शुद्धता, स्वदेशी, शुचिता, और विश्वसनीयता का ढिंढोरा भी पीटते रहते हैं। 2012-13 में देश मे चले अन्ना हजारे के इंडिया अगेंस्ट करप्शन आंदोलन के वे एक बड़े चेहरे थे। काले धन, आयकर, और अन्य आर्थिक मुद्दों पर उन्होंने एक कुशल अर्थविशेषज्ञ के रूप में अपनी राय भी कभी रखी थी। उनके पास देश के काले धन के बारे में सबसे विश्वसनीय आंकड़े भी हैं। वे यह सब कागज़ पत्तर लेकर कई बार टीवी और जन सभाओं में रूबरू भी हो चुके हैं।

पर आज वह एक अपराधी हैं। आज उनकी कंपनी के उत्पाद में अगर मिलावट मिलती है तो यह निंदनीय है। यह तो भगवा चोले और संतई के लबादे का अपमान है। इसका यही अर्थ हुआ कि, योग, आयुर्वेद, राष्ट्रभक्ति की आड़ में वे एक काला धंधा करते रहे हैं जो न सिर्फ मिलावटी सामान बेचता रहता है, बल्कि वे चीन के उत्पाद का भी प्रयोग करते हैं। चीन को दुर्लभ रक्त चंदन तस्करी से भेजते हुए भी उनका नाम उस गैंग में आया था। यह अलग बात है कि सत्ता की कृपा उन्हें इन सब झंझटों से बचाये रखती है।

प्रख्यात व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई जी कह गए हैं कि जब अर्थशास्त्र, धर्मशास्त्र पर हावी हो जाता है तो पंडित जी जूते की दुकान खोल लेते हैं। बाबा ने भी एक मोहित

शिष्य समाज बनाया। योग के कुछ टिप बताये। लोगों को स्वस्थ रहने के गुर समझाये। लोगों में इसका प्रभाव भी हुआ। कपाल भाति, अनुलोम विलोम इत्यादि आदिकाल से चले आ रहे विभिन्न प्राणायामों को उन्होंने, टीवी और अन्य प्रचार माध्यमों से घर-घर पहुंचाया। लोगों को इसका लाभ भी हुआ। रामदेव की शिष्य और अनुयायी परंपरा में तेजी से वृद्धि भी हुयी।

फिर इस धर्मशास्त्र पर अर्थशास्त्र हावी हुआ और एक कम्पनी खुल गयी पतंजलि नाम से। देश मे स्वदेशी या आयुर्वेदिक चिकित्सा की एक लॉबी है जो इसके पक्ष में काम करती रहती है। इसी लॉबी में राजीव दीक्षित जी भी थे। उन्होंने मल्टीनेशनल कंपनियों और बड़ी दवा कंपनियों के खिलाफ एक अभियान भी छेड़ा था। उनसे मेरी मुलाकात थी। वे प्रतिभावान व्यक्ति थे। उनकी मृत्यु हो गयी और इस पर भी विवाद उठा था। अब भी विवाद उठता रहता है।

पतंजलि स्वदेशी और आयुर्वेद के झंडाबरदार कंपनी के रूप में सामने आयी। धीरे धीरे दवा के कारोबार से बढ़ कर यह कम्पनी आटा, चावल, दाल से लेकर नूडल और कपड़ों तक के कारोबार में आ गयी। इनके वैद्य बालकिशन की आयुर्वेदिक डिग्री और ज्ञान पर भी सवाल उठ चुका है। हरिद्वार में जमीन के कब्जे और हेराफेरी के भी आरोप इन पर लग चुके हैं। कहने का आशय यह है कि जो भी आपराधिक आरोप किसी भी कारोबारी कंपनी पर लगते रहते हैं, और लग सकते हैं, वे रामदेव, बालकृष्ण और इनकी कंपनी पर लग चुके हैं । इसी क्रम मे यह ताज़ा आरोप है कि इनके द्वारा बनाया जा रहा शहद, मिलावटी है।

रामदेव और उनकी कम्पनी पर लगा आरोप उत्पाद की गुणवत्ता को लेकर है। उनका अपराध मिलावट का है। खाद्य उत्पाद में मिलावट का अपराध जघन्य अपराधों की कोटि में आता है। पतंजलि सहित सभी कम्पनियों के उत्पाद अगर परीक्षण में फेल हो गए हैं और उनमें मिलावट सिद्ध हो गयी है तो, सरकार को चाहिए कि उनके खिलाफ आपराधिक धारा का मुकदमा दर्ज कर उनके खिलाफ कार्रवाई हो।

रामदेव अब एक व्यापारी हैं, वैसे ही जैसे अन्य अन्य कम्पनियां व्यापार करती हैं। यह भी कंपनी, कॉरपोरेट के वे सभी हथकंडे अपनाते हैं जो अन्य कंपनियां अपनाती हैं। जो भी हो, मिलावट का सीधा असर जन स्वास्थ्य पर पड़ता है। इस अपराध पर सरकार को कड़ी कार्रवाई करनी चाहिए।

मोदी ने तो लाला को बहुत पहले ही पहचान लिया था

पाठक भूले नहीं होंगे कि मई 2014 में नरेन्द्र मोदी ने प्रधानमंत्री पद की शपथ ग्रहण समारोह में दुनिया भर को न्योता था, परन्तु इस लाला को नजदीक नहीं फ़टकने दिया। जानकार बताते हैं कि लाला ने मोदी के साथ लिपटने के प्रयास तो बहुत किये थे परन्तु उससे भी शातिर मोदी को उसके तमाम काले धंधों का पूरा ज्ञान था। पाठकों को याद होगा कि मनमोहन सरकार के आखिरी दौड़ में उस पर काफ़ी तगड़ा शिकंजा कसने की तैयारियां चल रही थी, जो मोदी सरकार बनने के बाद लाला की जान छुट गई।

धर्मांध भक्तों के इस देश में बाबा के बहकावे में आने वालों की संख्या भी मोदी भक्तों से उस वक्त कम न थी। इसलिये मोदी उससे बिगाड़ कर अपना राजनीतिक नुक्सान नहीं करना चाहते थे। इसलिये मोदी लाला रामदेव को संरक्षण तो पूरा देते रहे लेकिन अपने साथ लिपटने नहीं दिया। बीते 2019 के चुनाव से पूर्व लाला ने मोदी सरकार की कार्यशैली पर कुछ विपरीत टिप्पणियां करके कांग्रेस में भी अपनी पैठ जमाने का प्रयास किया था। परन्तु मोदी सरकार द्वारा थोड़ी सी आंख टेढी करते ही लाला को खतरे का आभास हो गया था और वे अपने पूराने ढर्रे पर लौट आये।

राम नारायण हलधर की ग़ज़ल

तू खेती आंसुओं की कर ,उन्हें क्या फ़र्क पड़ता है ,
जिए तो जी, मरे तो मर ,उन्हें क्या फ़र्क पड़ता है।

उन्हें पटरी बिछानी है, उन्हें सड़कें बनानी हैं ,
तेरी खेती छिने या घर ,उन्हें क्या फ़र्क पड़ता है।

भले ही ख़ून से लिख दे,तू अपने दर्द की गाथा ,
समंदर आंसुओं से भर ,उन्हें क्या फ़र्क पड़ता है।

लटक जा पेड़ पे चाहे,कुएं में डूब के मर जा ,
सुसाइड मंडियों में कर ,उन्हें क्या फ़र्क पड़ता है।

तुझे सूखा निगल जाए,या फिर सैलाब खा जाए ,
गिरे बिजली भले तुम पर,उन्हें क्या फ़र्क पड़ता है।

उन्हें हर काम में रिश्वत ,मुनाफ़ा चाहिए 'हलधर' ,
ख़ुदा से तू डरे, तो डर ,उन्हें क्या फ़र्क पड़ता है।

नौकरी माँग रहे कोरोना वॉरियर्स पर भोपाल में बरसीं लाठियाँ

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

भोपाल : जिन स्वास्थ्यकर्मियों को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कोरोना-वॉरियर्स की उपाधि देकर देश भर से उनके लिए ताली थाली बजवाई थी उन्हीं कोरोना वॉरियर्स को मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में शिवराज की पुलिस ने लाठी से मार मारकर लहूलुहान कर दिया। क्योंकि ये स्वास्थकर्मी अपनी जान जोखिम में डालकर मानवता की सेवा करने के एवज में अपना अधिकार मांग रहे थे, नौकरी मांग रहे थे।

बता दें कि मध्य प्रदेश में कोरोना काल के दौरान बड़े पैमाने पर स्वास्थ्यकर्मियों की भर्ती हुई थी। ये भर्ती कॉन्ट्रैक्ट के आधार पर हुई थी। अब इनकी ज़रूरत नहीं रही तो इनकी सेवा समाप्त कर दी गई है। इन्हें नौकरी से निकाला जा रहा है। इसे लेकर स्वास्थ्यकर्मी प्रदेश के कई हिस्सों में प्रदर्शन कर रहे हैं। शुक्रवार को भी स्वास्थ्यकर्मियों ने भोपाल में प्रदर्शन किया है। प्रदर्शन में प्रदेश भर के कोविड-स्वास्थ्य संगठन की ओर से नीलम पार्क में करीब 1200 फार्मासिस्ट, नर्स एकत्रित हुए थे। प्रदर्शन के दौरान स्वास्थ्यकर्मी वहां से हटने को तैयार नहीं थे। इस पर पुलिस ने लाठीचार्ज किया है। पुलिस लाठीचार्ज में 15 से ज्यादा स्वास्थ्यकर्मी ज़ख्मी भी हुए हैं। इसमें कई महिला स्वास्थ्यकर्मी भी शामिल हैं। जबकि 47 स्वास्थ्यकर्मियों को पुलिस ने हिरासत में लिया है।

प्रदर्शनकारियों का कहना है कि कोरोना काल के दौरान अप्रैल महीने में पूरे प्रदेश में 6213 कर्मचारियों की भर्ती हुई थी। इसमें स्टॉफ नर्स, पैरामेडिकल स्टॉफ, लैब टेक्नीशियन, फार्मासिस्ट समेत अन्य स्टॉफ शामिल हैं। अब उनसे कहा जा रहा है कि आपका कांट्रैक्ट 31 दिसंबर तक ही था।

पुलिस प्रशासन का पक्ष

पुलिस का कहना है कि इन्हें सिर्फ एक दिन के लिए ही अनुमति दी गई थी। उसके बावजूद ये लोग वहां डटे हुए थे। भोपाल एएसपी ने कहा कि ये लोग वहां 4 दिन से प्रदर्शन कर रहे थे। उनकी मांग को मुख्यमंत्री और स्वास्थ्य मंत्री तक पहुंचा दिया गया है। लेकिन बिना अनुमति लोग वहां बैठे थे। जब हम लोगों ने हटाने की कोशिश की तो पुलिस पर अटैक कर दिया। उसके बाद कार्रवाई की गई है।

भोपाल के एएसपी ने कहा है, "वे पिछले

4 दिनों से विरोध-प्रदर्शन कर रहे थे और स्वास्थ्य मंत्री और सांसद से मिले थे। उनकी मांगों को सीएम को भेज दिया गया। फिर भी वे बिना अनुमति के विरोध कर रहे थे। उन्हें गिरफ्तारी के लिए कहा गया, उनमें से कुछ ने पुलिस पर हमला करने की कोशिश की और एक पुलिस वाला घायल हो गया। गिरफ्तारी के लिए न्यूनतम पुलिस बल का इस्तेमाल किया गया।"

कमलनाथ ने की कड़ी निंदा

कोरोना वॉरियर्स के खिलाफ़ सरकार और पुलिस प्रशासन के बर्बर और कृतघ्न व्यवहार की निंदा करते कांग्रेस नेता व पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने दोषी पुलिस वालों पर कड़ी कार्रवाई की मांग की है। उन्होंने स्वास्थ्यकर्मियों पर लाठीचार्ज का वीडियो साझा करते हुए एक के बाद एक तीन ट्वीट करके लिखा है, जहाँ एक तरफ़ विश्व भर में कोरोना योद्धाओं का सम्मान किया जा रहा है, उन्हें प्रोत्साहित किया जा रहा है वहीं दूसरी तरफ़ मध्यप्रदेश की शिवराज सरकार उन पर बर्बर तरीक़े से लाठियाँ बरसा रही है, यह घटना बेहद निंदनीय व मानवीयता व इंसानियत को शर्मसार करने वाली। कोरोना की इस भीषण महामारी में अपनी जान जोखिम में डाल सेवाएँ देने वाले कोरोना वारियर्स भोपाल में अपनी जायज़ माँगों को लेकर प्रदर्शन कर रहे थे तब उन्हें न्याय दिलवाने की बजाय उन पर बर्बर तरीक़े से लाठीचार्ज किया गया। जो सम्मान के हक़दार उनसे अपराधियों की तरह व्यवहार ?

मोदी ने बजवाया था ताली थाली

19 मार्च को प्रधानमंत्री मोदी ने देश के नागरिकों से अपील किया था कि लोग 22 मार्च की शाम 5 बजे पांच मिनट तक स्वास्थ्यकर्मियों के सम्मान में ताली थाली बजाएं। और इतना ही नहीं 22 मार्च को फिर ट्वीट करके नरेंद्र मोदी ने ताली थाली प्रोजेक्ट की पूर्ति पर ट्विटर पर आकर थैंक्यू भी कहा था। अब उन्हीं कोरोना वॉरियर्स को दूध में पड़ी मक्खी की तरह निकालकर बाहर फेंका जा रहा है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मौन हैं।